SHIKSHA SAMVAD
International Journal of Multidisciplinary Research
ISSN: 2584-0983 (Online)
© Shiksha Samvad|Volume-03| Issue-03| March- 2026
Available online at: https://shikshasamvad.com/
DOI:- https://doi.org/10.64880/shikshasamvad.v3i3.24

भीष्म साहनी की कहानियों में साम्प्रदायिकता और मानव मूल्य

डॉ० कृष्ण कुमार पाल
असिस्टेंट प्रोफेसर, हिन्दी विभाग
का. सु. साकेत पी.जी. कॉलेज, अयोध्या, उत्तर प्रदेश

सारांश :

यह शोधपत्र भीष्म साहनी की कहानियों में निहित "साम्प्रदायिकता और मानव मूल्यों" का विश्लेषण प्रस्तुत करता है। भीष्म साहनी ने अपनी कहानियों के माध्यम से भारत-विभाजन के समय उत्पन्न सामाजिक, राजनीतिक और मानसिक संकटों को अत्यंत यथार्थ और संवेदनात्मक रूप में चित्रित किया है। इस शोधपत्र में उसी 'साम्प्रदायिकता' जोकि एक संकीर्ण मानसिकता है, जिसमें व्यक्ति अपने धर्म को श्रेष्ठ मानकर अन्य धर्मों के प्रति द्वेष रखता है। यह प्रवृत्ति ऐतिहासिक, राजनीतिक और सामाजिक कारणों से विकसित होती है और अंततः हिंसा तथा अमानवीयता को जन्म देती है। भीष्म साहनी की प्रमुख कहानियाँ—'अमृतसर आ गया', 'पाली', 'निमित्त' और 'झुटपुट' के विश्लेषण से यह स्पष्ट किया गया है कि साम्प्रदायिक परिस्थितियाँ मनुष्य को क्रूर बना सकती हैं लेकिन उसके भीतर मानवीय संवेदनाएँ पूरी तरह समाप्त नहीं होतीं हैं। 'पाली' में जहाँ एक मुस्लिम परिवार द्वारा हिन्दू बालक का पालन-पोषण मानवता की मिसाल प्रस्तुत करता है, वहीं 'अमृतसर आ गया' में परिस्थितियों के अनुसार बदलती मानवीय प्रवृत्ति को दर्शाया गया है। अंततः इस शोधपत्र में यह स्थापित किया गया है कि भीष्म साहनी की कहानियाँ साम्प्रदायिकता की विडंबनाओं को उजागर करते हुए मानवता, करुणा, सहिष्णुता और भाईचारे जैसे मूल्यों को स्थापित करती हैं। उनकी रचनाएँ आज भी समाज को साम्प्रदायिकता से ऊपर उठकर मानवीय दृष्टिकोण अपनाने की प्रेरणा देती हैं।

बीज शब्द: साम्प्रदायिकता की मनोवृत्ति, उदारता का पाखंड, विभाजन की त्रासदी, दंगे, विस्थापन

प्रस्तावना :

साहित्य जगत में भीष्म साहनी की पहचान एक प्रमुख कथाकार के रूप में है। वे प्रगतिवादी परंपरा के सशक्त लेखक हैं। उन्होंने अपनी कहानियों में निम्न और मध्यवर्गीय समाज को विशेष स्थान दिया है। उनकी रचनाओं में जातिभेद, वर्णभेद, धर्माडंबर, धर्माभिमान के साथ-साथ पूँजीवादी, सामंतवादी तथा शोषणकारी प्रवृत्तियों का यथार्थ चित्रण मिलता है। भीष्म साहनी ने अपनी कहानियों के माध्यम से भारत-विभाजन के दौरान उत्पन्न सामाजिक, राजनीतिक और मानसिक उथल-पुथल को अत्यंत संवेदनात्मक रूप में प्रस्तुत किया है। "'सांप्रदायिकता' शब्द 'संप्रदाय' से निर्मित है। 'संप्रदाय' का अर्थ किसी विशेष धार्मिक मत या उसके अनुयायियों से है। इस प्रकार सांप्रदायिकता का आशय अपने धर्म या संप्रदाय की श्रेष्ठता स्थापित करने और अन्य धर्मों के प्रति द्वेषभाव रखने से है।"[1] डॉ. लाजवंती भटनागर के अनुसार- "धर्म एक स्थायी तत्व है जबकि संप्रदाय समय के साथ बदलते रहते हैं।"[2] राम पुनियानी के मतानुसार सांप्रदायिकता का उद्भव अंग्रेजों की 'फूट डालो और राज करो' की नीति तथा सामंती शक्तियों के कारण

हुआ।"[3] कृष्ण कुमार खन्ना के अनुसार, विशेष ऐतिहासिक परिस्थितियों में धर्म, राजनीति और आर्थिक तत्वों के सम्मिलन से सांप्रदायिकता का स्वरूप निर्मित होता है। वहीं प्रो. पुरुषोत्तम अग्रवाल इसे हिंसा और छद्म पर आधारित विचारधारा मानते हैं।"[4]

भीष्म साहनी ने अपनी कहानियों में साम्प्रदायिकता के विभिन्न रूपों का सजीव चित्रण किया है। उनकी कहानियों—"'अमृतसर आ गया', 'पाली', 'निमित्त', 'झुटपुट' आदि—में विभाजन की त्रासदी, दंगों की भयावहता तथा मानवीय मूल्यों का गहन चित्रण मिलता है। 'अमृतसर आ गया' कहानी में यह दिखाया गया है कि परिस्थितियाँ बदलते ही मनुष्य का स्वभाव भी बदल जाता है।"[5] 'पाली' कहानी में लेखक कहते हैं—"बात कभी खत्म नहीं होती…।" यह कहानी मानवता को धर्म से ऊपर स्थापित करती है।"[6] 'निमित्त' कहानी में जीवन-दर्शन प्रस्तुत करते हुए कहा गया है—"दाने-दाने पर मोहर होती है…।"[7] साहित्य जगत में भीष्म साहनी की पहचान एक कथाकार के रूप में है ।वे प्रगतिवादी परम्परा के लेखक हैं। उन्होंने अपनी कहानियों में निम्न और मध्यवर्गीय समाज को विशेष स्थान दिया है।उनकी कहानियों में सामाजिक बुराईयों जातिभेद, वर्णभेद,धर्माडंबर, धर्माभिमान के साथ-साथ पूँजीवादी, सामंतवादी, शोषक और शोषित वर्ग की स्थिति का यथार्थ वर्णन किया गया है। भीष्म साहनी ने अपनी कहानियों के माध्यम भारत विभाजन के दौरान उत्पन्न सामाजिक, राजनीतिक और मानसिक उथल-पुथल को गहराई से प्रस्तुत किया है। इस कहानी में लेखक ने यात्रियों की इस प्रवृत्ति- हिन्दू या मुसलमान दोनों अपने इलाके में एक-दूसरे के साथ ज्यादती पर भी व्यंग्य किया है कि ट्रेन के भीतर जगह पा चुके यात्री अगले स्टेशनों पर चढ़ने वाले यात्रियों को अपनी सुविधा में खलल के रूप में देखते हैं और उनके साथ बहुत ही निर्मम अमानवीय व्यवहार करते हैं। जब ट्रेन पाकिस्तान के इलाके में किसी स्टेशन पर रुकती है तो एक हिन्दू अपने परिवार और असबाब के साथ ट्रेन में घुस जाता है। शहर में दंगा फैल चुका है इसलिए वह शहर छोड़ किसी सुरक्षित स्थान पर जाने के लिए ट्रेन में घुसा है, परन्तु ट्रेन के यात्री उसके घुसने का विरोध करते हैं। तभी उसी डिब्बे में यात्रा कर रहे पठान उसका सामान बाहर फेंक देते हैं, अतः मजबूर होकर उस व्यक्ति को परिवार के साथ चलती ट्रेन से उतरना पड़ता है। ठीक ऐसा ही व्यवहार दुबला-पतला बाबू एक बूढ़े मुसलमान दम्पति के साथ करता है। जो भारत में किसी स्टेशन से ट्रेन में चढ़ने की कोशिश करते हैं। ट्रेन के दरवाजे का हैंडल पकड़ पायदान पर लटक चुके बूढ़े मुसलमान के सिर पर बाबू लोहे की छड़ से वार करता है। परिणामतः वह डिब्बे से नीचे गिर जाता है उसका सफर वहीं समाप्त हो जाता है। अपने संदेश में यह कहानी बड़ी स्पष्टता से यह जाहिर कर देती है कि हिन्दू या मुसलमान दोनों में से कोई भी न तो सहिष्णु, उदार और करुणामय है और न ही कट्टर, क्रूर और निर्मम परिस्थितियों के बदलते ही मनुष्य की फितरत बदल जाती है। 'पाली' साहनी जी की बहुत ही मार्मिक कहानी है, जो विभाजन की त्रासदी पर आधारित है। देश विभाजन कर पाकिस्तान को बनाना शरणार्थियों की समस्या को जन्म देना था। भीष्म साहनी जी स्वयं विभाजन की समस्या को भुक्त भोगी रहे हैं और बंटवारे की त्रासदी झेल चुके हैं, इसी का चित्रण 'पाली' नामक कहानी में हुआ है। लेखक ने मानव जीवन के कटु यथार्थ को व्यक्त करते हुए कहा है कि- "बात कभी खत्म नहीं होती। जिन्दगी के छोर कभी एक दूसरे से नहीं मिलते, न जीवन में, न कथा कहानियों में। हम केवल इस आशा में जीते रहते हैं कि एक दिन वे मिल जायेंगे और कभी-कभी हमें ऐसा भ्रम होने लगता है कि सचमुच मिल गये है।"[8]

इसी कहानी में पाकिस्तान से प्राण रक्षा के लिए भागते मनोहरलाल, कौशल्या और उनके दो बच्चों की कथा कही गई है। जिसमें "मनोहरलाल अपनी पत्नी कौशल्या गोद की बेटी और चार साल के पुत्र पाली को लिए शरणार्थियों की लारी में सवार हो भारत आना चाहते है लेकिन मार-काट छिड़ चुकी है और चारों तरफ भयानक अफरा-तफरी मची है। इसी बीच लारी में माल असबाब के साथ परिवार को चढ़ाते हुये मनोहरलाल को महसूस होता है कि बेटे पाली का हाथ उनसे छूट गया है। जब वे पाली को खोजने लगते हैं तो लारी में बैठे अन्य लोग जल्दी से चलने का आग्रह करते हैं। अंततः मनोहरलाल यह मानकर लारी में बैठ जाते हैं कि शायद बेटा किसी दूसरी लारी में चढ़ गया हो पर ऐसा नहीं था। उधर जो गाड़ी आगे चल रही थी उस पर एक बार फिर से हमला होता है। जिसकी चपेट में आने से कौशल्या अपनी गोद की बेटी को भी खो देती है। इस प्रकार से मनोहरलाल और कौशल्या का आंगन सूना हो जाता है। मनोहरलाल और कौशल्या जैसे विपत्ति के मारे लाखों लोग विभाजन की सच्चाई थे। उधर चार साल का पाली एक चीनी

मिट्टी बर्तन बेचने वाले गरीब शकूर अहमद के हाथ लगता है। जिसकी निःसंतान बीबी उसे अपना बच्चा मान लेती है। फिर मौलवी के दबाव और हस्तक्षेप से उस लड़के की सुन्नत आदि का कर्मकांड करके उसे मुसलमान बनाया जाता है। लगभग चार साल तक पाली मुसलमान दंपत्ति के साथ उनका बेटा बनकर रहता है और इस्लामी रीति-रिवाज से वह भलीभाँति परिचित हो जाता है। मनोहरलाल अपने बिछड़े बेटे को खोजते-खोजते लगभग चार साल बाद शकूर के घर पहुँचते हैं और अंततः अपने बेटे को प्राप्त करने में सफल होते है। इस कहानी में अपनी संतान को गंवा चुके माता-पिता की पीड़ा बहुत ही मार्मिक ढंग से उभारा गया है। साथ ही मुसलमान दंपत्ति द्वारा एक हिन्दू बच्चे को अपना लेना यह दिखाता है कि धर्म और संप्रदाय का बंटवारा कितना ही बनावटी किस्म का है। कोई इंसान कितना भी खुद को हिन्दू या मुसलमान कहे पर उसके दिल में मानवीयता हमेशा जिंदा रहती हैं।

इस कहानी में बड़े असरदार तरीके से धर्म के झंडा-बरदारों की असहिष्णुता और कट्टरता को दर्शाया गया है। मौलवी तबतक उस बच्चे की सूरत से नफरत करता है जबतक कि उसकी सुन्नत नहीं कर दी जाती है। दूसरी ओर बच्चा जब मनोहरलाल के साथ जा रहा होता है तो समाज सेविका उसकी टोपी उतारकर चलती जीप के बाहर फेंक देती है। जो लगभग चार साल तक मुसलमान परिवार में रहने के कारण पाली पाँचों वक्त की नमाज का पाबंद हो चुका है। "जब यह मनोहरलाल के घर आए हुए मेहमानों के बीच नमाज पढ़ने के लिए बैठ जाता है तो कट्टरपंथी मानसिकता वाले कुछ लोग पाली को नमाज पढ़ने से रोकने की कोशिश भी करते हैं। कुल मिलाकर यह कहानी एक परिवार पर टूटे विभाजन के कहर और इंसानियत के रिश्ते को बड़ी संवेदनात्मक गहराई के साथ प्रस्तुत करती है।"[9] निमित्त कहानी पंजाबी जीवन से सम्बन्धित पटियाला शहर की है। महफिल में बैठे हुए बुजुर्ग बोले "मैं तो यह जानता हूँ कि दाने-दाने पर मोहर होती है जो मठरी खाना भाग्य में लिखा है तो यह खाकर ही रहेंगे।"[10] "देखो. जी जब दिन पूरे हो जाएँगे तो मालिक अपने आप उठा लेगा। मैंने तो अपने को भगवान के हाथ में सौप रखा है। इसी को मेरी सेहत का राज समझ लो।"[11] देश के बंटवारे के दिनों में में राजगढ़ में था। राजगढ़ में भी बड़ी मारकाट हुई। बुजुर्ग सुना रहा था जब फिसाद शुरू हुई तो हमारी फैक्टरी बंद हो गई। पर, फैक्टरी की लेबर फंस गई। पन्द्रह बीस हजार मजदूर थे जो फैक्टरी के नजदीक ही रहा करते थे, वे डरकर फैक्टरी के अन्दर घुस आए और बोले कि बाहर झोपड़ी में हमें डर लगता है, हमें यहीं पर पड़ा रहने दो। मैंने कहा- "अगर तुम्हे बचना है तो तुम बाहर भी बच जाओगे, अगर मरना है तो फैक्टरी के अन्दर भी काटे जा सकते हो, बेशक फैक्टरी के अन्दर रहना चाहते हो तो यहाँ पड़े रहो।"[12] "मैंने उसे शेर सिंह ड्राइवर के साथ भेज दिया। शेर सिंह ड्राइवर बड़ा ईमानदार ड्राइवर था। पर, उन दिनों कौन जानता था किसके दिल में क्या है? क्या मालूम रास्ते में शेर सिंह ही इसका काम तमाम कर दे। पर, मैं बया कर सकता हूँ? बूढ़ा मिस्त्री जाना चाहता था और चला गया।"[13] "तभी लोगों को पता चला कि मुसलमान शरणार्थियों के लिए पटियाले के किले में कैंप खोला गया है। पटियाला के किले में सभी शरणार्थियों को इकट्ठा किया जा रहा था, ताकि वहाँ से उन्हें बाद में पाकिस्तान भेजा जा सके।"[14] "इमामदीन ने पाकिस्तान से खत लिखा बस, दही अपने घर-परिवार के लोग भी मिल गए थे। दुआ सलाम और हजार हजार दुआएं कि तुमने मुझे मेरी जिन्दगी बख्शी है कि मैं तुम्हारा उपकार भूल नहीं सकता। अब पाकिस्तान में बैठा है। किस्मत अच्छी थी कैंप में उसे अपने घर परिवार के लोग भी मिल गये थे मैने वही कहा ना, जिसको बचना हो, वह बच निकलता है, दाने-दाने पर मोहर होती है।"[15]

इस प्रकार इस कहानी के द्वारा भीष्म साहनी ने एक आदमी के प्रति दूसरे का अपना धर्म, कर्तव्य, को दिखाया है। हम सब निमित्त है, हिन्दू हो या मुस्लिम। समाज में होने वाले विषयों के लिए अपने मूल्यों को नहीं खोना चाहिए । अपने कर्तव्य पर ध्यान देना चाहिए, जो बंटवारे के समय में फैक्टरी में हुई घटना को लेकर एक हिन्दू अपने साथ काम करने वाले मुसलमान के प्रति जो कर्तव्य दिखाया है, उसे इस कहानी के द्वारा स्पष्ट किया है।

'झुटपुट' कहानी में दिल्ली में सिक्खों के विरूद्ध जो दंगे हुए उसका चित्रण किया गया है। पर दंगें, दंगे ही होते है। क्योंकि दंगों के पीछे जो तत्व सक्रिय रहते हैं, वे असमाजिक और विनाशकारी होते हैं। वैसे मानवीय संबंध जन सामन्य में बराबर बने रहते हैं। इस कहानी की पृष्ठभूमि में सिक्खों के जिन दंगों का आधार लिया गया है, उन दंगों में अमानवीयता का नंगा नाच देखने को मिलता है। जिन्होनें सिक्खों की सम्पत्ति लूटी, उनकी हत्या की. वे निश्चित ही गुण्डे, लुटेरे, बदमाश थे। वे मनुष्य नहीं थे। इन दंगों के विषय में लेखक का मत भी दृष्टव्य है, "दंगे में तो लोग दुश्मन को पहचानते हैं. एक

© Shiksha Samvad| Received: 03 March-2026 | Accepted: 10 March- 2026 | Published: 15 March- 2026

दूसरे को ललकारते हैं, एक दूसरे का पीछा करते हैं। पर यहाँ तो सड़क खाली थी और दुकान जो चाहे तोड़ जाए जो चाहे जला जाए। दंगे ऐसे नहीं होते। लुटेरों में एक भी चेहरा पहचाना नहीं था एक भी आदमी अपने मुहल्ले का नहीं था। क्या हम इसे दंगा कह सकते हैं।"[16] किस तरह अफवाहें फैलती है या फैलायी जाती है तो भीष्म जी ने इस कहानी में यह तो स्पष्ट किया है कि आदमी वारदातों से परेशान हो जाता है। बाजार पाठशालाएँ और जनसामान्य आतंकित होता है। आम आदमी का इस तरह का ऐसा रूप दिखाई देता है जिसकी हम कल्पना नहीं कर सकते हैं, अन्य सामाजिक गतिविधियों रूक जाती है तो साथ ही हिंसा में भी, दूध की गाडी लेकर आने वाला मिल ही जाता है। मानवीय संबंधों की आतरिक भावनाओं का अत्यंत मार्मिक रूप इस कहानी में व्यक्त हुआ है। यह कहानी इस बात का संकेत देती है कि मानवता के नाम पर अब भी कुछ शेष है। अतः हम कह सकते हैं कि भीष्म साहनी की कहानियों में तत्कालीन साम्प्रदायिक समस्याओं का जीवंत चित्रण हुआ है।

उपसंहार :

निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है कि भीष्म साहनी की कहानियाँ साम्प्रदायिकता के यथार्थ और उसके दुष्परिणामों का अत्यंत मार्मिक एवं सजीव चित्रण प्रस्तुत करती हैं। उन्होंने यह स्पष्ट किया है कि साम्प्रदायिकता किसी एक धर्म या समुदाय की विशेषता नहीं है बल्कि परिस्थितियों, स्वार्थों और संकीर्ण मानसिकता से उत्पन्न होने वाली एक प्रवृत्ति है जो मनुष्य को अमानवीय बना देती है। उनकी कहानियों में यह स्पष्ट देखा जा सकता है कि दंगों और विभाजन जैसी परिस्थितियों में मनुष्य कभी क्रूर और हिंसक रूप धारण कर लेता है तो कभी करुणा, सहानुभूति और मानवता का परिचय भी देता है। इस द्वंद्व के माध्यम से लेखक ने यह स्थापित करने का प्रयास किया है कि मूलतः मनुष्य के भीतर मानवता का तत्व विद्यमान रहता है जिसे परिस्थितियाँ प्रभावित अवश्य करती हैं लेकिन पूरी तरह समाप्त नहीं कर पाती हैं। अतः निष्कर्ष रूप में यह कहा जा सकता है कि भीष्म साहनी की कहानियाँ साम्प्रदायिकता के विरुद्ध एक सशक्त मानवीय हस्तक्षेप हैं जो यह संदेश देती हैं कि धर्म से ऊपर उठकर मानवता, सहिष्णुता और भाईचारे को अपनाना ही समाज की वास्तविक आवश्यकता है। उनकी रचनाएँ आज भी सामाजिक समरसता और मानवीय मूल्यों की स्थापना के लिए अत्यंत प्रासंगिक हैं।

सन्दर्भ ग्रंथ सूची:

1.संपादक नवल जी, 'नालंदा विशाल शब्द सागर,' पृ.सं.-1380

2.भटनागर, लाजवंती, धर्म संप्रदाय और मीरा का भक्तिभाव, पृ.सं.-1428

3.वर्मा, लखबीर कौर (2013), 'देश विभाजन और नारी की त्रासदी', विकास प्रकाशन, कानपुर, पृ०-24

4.वारे, सुभाष, 'राष्ट्र सेवा दल', पृ०-18

5.साहनी,भीष्म(2018), 'पटरियाँ', राजकमल प्रकाशन प्रा०लि०, दरियागंज, नई दिल्ली, पृ०-27

6.दुबे, संजीव कुमार(2012),'हिन्दी कहानी और साम्प्रदायिकता' मेधा बुक्स एक्स 11, दिल्ली, पृ०-135

10.साहनी,भीष्म(2016),'शोभायात्रा', राजकमल प्रकाशन प्रा०लि०,दरियागंज,नई दिल्ली पृ०-9

11.वही पृ०-12

12.वही पृ०-14

13.वही पृ०-13

14.वही पृ०-17

15.वही पृ०-17

16.साहनी,भीष्म(2018),'पाली', राजकमल प्रकाशन प्रा०लि०,दरियागंज, नई दिल्ली पृ०-44

Cite this Article:

डॉ० कृष्ण कुमार पाल," भीष्म साहनी की कहानियों में साम्प्रदायिकता और मानव मूल्य"*Shiksha Samvad International Open Access Peer-Reviewed & Refereed Journal of Multidisciplinary Research, ISSN: 2584-0983 (Online), Volume 03, Issue 03, pp.208-2012, March-2026. Journal URL: https://shikshasamvad.com/*

This is an Open Access Journal / article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution License CC BY-NC-ND 3.0) which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited. All rights reserved.

CERTIFICATE

of Publication

This Certificate is proudly presented to

डॉ० कृष्ण कुमार पाल

For publication of research paper title

भीष्म साहनी की कहानियों में साम्प्रदायिकता और मानव मूल्य

Published in 'Shiksha Samvad' Peer-Reviewed and Refereed Research Journal and E-ISSN: 2584-0983(Online), Volume-03, Issue-03, Month March 2026, Impact Factor-RPRI-3.87.

Dr. Neeraj Yadav
Editor-In-Chief

Dr. Lohans Kumar Kalyani
Executive-chief- Editor

Note: This E-Certificate is valid with published paper and the paper must be available online at: https://shikshasamvad.com/

DOI:- https://doi.org/10.64880/shikshasamvad.v3i3.24